जर्मनी के एकीकरण में बिस्मार्क की भूमिका

Course - M.A. History, Part-II; Paper-XVI; Prepared by—Dr. P.K. Poddar

उत्तर - 1862 ई० में बिस्मार्क द्वारा प्रशा के ~~[illegible]~~ चांसलर का पदभार ग्रहण करने के साथ देश के एकीकरण आन्दोलन ने एक नया यथार्थवादी और व्यावहारिक रूप अख्तियार किया। उसका दृढ़ विश्वास था कि समकालीन महान प्रश्नों का समाधान भाषणों और बहुमतों द्वारा नहीं, वरन "रक्त और लोहे" (Blood and iron) द्वारा ही किया जा सकता है।

बिस्मार्क ने अपना उद्देश्य प्राप्त करने के लिए एक दशक में तीन युद्ध किए तथा जर्मनी के राष्ट्रीय एकीकरण का सपना साकार कर दिया। वह स्पष्टतः देख रहा था कि आस्ट्रिया को जर्मनी की राजनीति से निकाल बाहर किए बिना राष्ट्रीय एकीकरण का मकसद हासिल नहीं किया जा सकता। अतः उसने अविलम्ब इसकी तैयारी शुरू कर दी। इसी समय श्लेसविग और होल्सटीन के दो लघु राज्यों की समस्या सामने आयी। बिस्मार्क को अपनी नीति के कार्यान्वयन के लिए बना-बनाया अवसर मिल गया। श्लेसविग में अंशतः डेन तथा अंशतः जर्मन मूलक लोग बसे हुए थे। ये दोनों राज्य डेनमार्क के अधीन नहीं थे, लेकिन वहाँ के राजा के व्यक्तिगत नियंत्रण में जरूर थे। डेनमार्क उसे अपने देश का अभिन्न अंग बनाना चाहता था। इसलिए 1863 ई० में एक नये संविधान के द्वारा श्लेसविग और होल्सटीन को डेनमार्क में सम्मिलित कर लिया गया। डेनमार्क द्वारा इस कदम के खिलाफ बिस्मार्क ने आस्ट्रिया से डचियों के मामले में हस्तक्षेप करने का प्रस्ताव दिया। दोनों ने मिलकर डेनमार्क से युद्ध की घोषणा (1864 ई०) कर दी। युद्ध में डेनमार्क पराजित हुआ। प्रशा और आस्ट्रिया ने यह तय किया कि दोनों का सम्मिलित अधिकार डचियों पर रहेगा, लेकिन सुविधा के लिए आस्ट्रिया ने अस्थायी रूप से होल्सटीन पर अपना आधिपत्य जमाया और प्रशा ने श्लेसविग पर। डचियों के इस प्रश्न के निबटारे में बिस्मार्क ने बड़ी दूरदर्शिता से काम लिया। यह उसकी प्रथम विजय थी। डचियों के प्रश्न का निबटारा ठीक से नहीं हो सका। बाद में आस्ट्रिया ने समझा कि

बिस्मार्क ने उसे बेवकूफ बनाया। बिस्मार्क जानता था कि दोनों इच्छों को लेकर आस्ट्रिया से उसका संघर्ष होगा और यही उसके समाधान का एकमात्र उपाय होगा। यह युद्ध आस्ट्रिया के विरुद्ध छेड़ा गया एक जर्मन गृह युद्ध होगा। शीघ्र ही लघु राज्यों के नक्शों को लेकर दोनों राज्यों में विवाद शुरू हो गया। आवागमन के मार्ग पर अधिकार, आंतरिक शांति बनाए रखने का नेशन आदि ऐसे मुद्दे थे जिन पर दोनों में अचानक मतभेद शुरू हुआ और विवाद बढ़ता ही गया। 1866 ई० तक ऐसी परिस्थिति पैदा हो गयी कि आस्ट्रिया और प्रशा के बीच युद्ध का भिड़ना अवश्यम्भावी हो गया। 1866 ई० का आस्ट्रो-प्रशा युद्ध मुश्किल से सात सप्ताह चला, किन्तु इसके परिणाम दूरगामी और निर्णायक थे। आस्ट्रिया पूरी तरह पराजित हुआ। जर्मन महासंघ विघटित कर दिया गया और केवल दक्षिण के चार जर्मन राज्यों को छोड़कर सभी उत्तरी राज्यों के एक उत्तरी जर्मन महासंघ की स्थापना की गई, जिसका नेता प्रशा था। इस प्रकार सिर्फ चार जर्मन राज्यों को छोड़कर जर्मनी के एकीकरण का प्रथम चरण पूरा हो गया। इसी युद्ध का यह भी परिणाम निकला कि प्रशा को फ्रांस के साथ लड़ना पड़ा। इस युद्ध के परिणामस्वरूप फ्रांसीसियों को इतनी निराशा हुई कि एक फ्रांसीसी ने मार्मिक शब्दों में कहा, "सेडोवा के मैदान में फ्रांस की पराजय हुई, आस्ट्रिया की नहीं।"

आस्ट्रिया पर विजय प्राप्त करने के बाद उत्तरी जर्मन संघ का निर्माण हुआ, लेकिन इससे जर्मनी की एकता पूरी नहीं हुई। अभी चार दक्षिणी राज्य बवेरिया, बाडेन, वुर्टेमबर्ग और हेस डार्मस्टैड नए संगठन से बाहर थे। बिस्मार्क इन राज्यों को प्रशा में मिलाने की भूमिका तैयार कर रहा था। उधर फ्रांस प्रशा के उत्कर्ष और बढ़ती हुई शक्ति से बेचैन हो रहा था। वह किसी भी कीमत पर इन चार राज्यों का प्रशा के साथ विलय होने देने के पक्ष में नहीं था। ऐसी अवस्था में हर जगह यह अनुभव किया जाने लगा कि इन चार राज्यों को लेकर

फ्रांस और प्रशा के बीच युद्ध अवश्यम्भावी हो
दक्षिणी जर्मन राज्यों में फ्रांस के प्रति फैली दुर्भावना
को बिस्मार्क ने और तीव्र किया। इस प्रकार युद्ध के
लिए सिर्फ एक बहाने की जरूरत थी। यह बहाना जल्द
ही मिल गया। लड़ाई का तात्कालिक कारण स्पेन था।
स्पेन की राजगद्दी पर होहेनजोलर्न परिवार के एक
व्यक्ति के बैठाने से प्रशा को कूटनीतिक बिस्मार्क ने इस
तरह से जर्मनी और फ्रांस की जनता के सामने रखा कि
दोनों देशों के लोगों ने समझा कि इस प्रश्न को लेकर
उनके राजाओं का अपमान हुआ है दोनों देश ही
पहले से ही लड़ने की तैयारी कर रहे थे। इस प्रकार
स्पेन की गद्दी के उत्तराधिकार की समस्या ने स्थिति को
इतना बिगाड़ दिया कि, जुलाई 1870 ई० में फ्रांस और
प्रशा के बीच लड़ाई शुरू हो गई। इस युद्ध में फ्रांस
निर्णयात्मक रूप से और बुरी तरह पराजित हुआ। सेडान
के युद्ध में नेपोलियन तृतीय ने आत्म समर्पण कर
दिया और उसे बंदी बना लिया गया। विजयी जर्मन
सेनाएँ पेरिस में प्रवेश कर गयीं। चार दक्षिण
राज्य अपनी स्वेच्छा से उत्तरी संघ में सम्मिलित
हो गए। इस तरह जर्मनी का एकीकरण पूरा हुआ।
18 जनवरी 1871 को वर्साय के महल में प्रशा का राजा
विलियम प्रथम को जर्मन सम्राट घोषित किया गया।

इस प्रकार बिस्मार्क के
नेतृत्व में जर्मनी का एकीकरण सम्पन्न हुआ। यूरोप
के नक्शे पर एक एकीकृत जर्मनी का उदय हुआ। जर्मनी
का एकीकरण राष्ट्रीयता की विजय का एक असाधारण
उदाहरण है।